प्रथम दिवस आवरण
FIRST DAY COVER

5-5-1973

नई दिल्ली
NEW DELHI
5-5-73
INDIAN MINIATURE PAINTINGS

भारतीय
लघु चित्रण कला

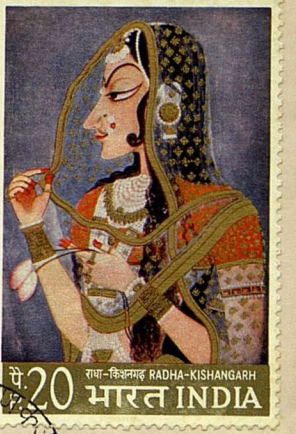

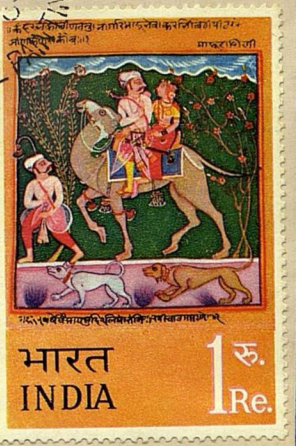

INDIAN
MINIATURE
PAINTINGS

भारतीय डाक-तार विभाग INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

भारतीय डाक-तार विभाग INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

विशेष डाक-टिकट

भारतीय मुखौटों की श्रृंखला

SPECIAL POSTAGE STAMPS

INDIAN MASKS SERIES

15-4-1974

डाक-तार महानिदेशक, नई दिल्ली
की ओर से अभिवादन सहित।

With the Compliments of
THE DIRECTOR GENERAL OF POSTS & TELEGRAPHS
NEW DELHI

सूर्य SUN
भारत INDIA पै. 20P.

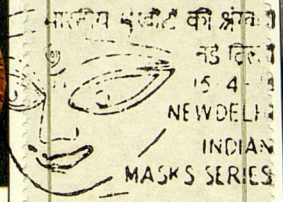
NEWDELHI
INDIAN
MASKS SERIES

चन्द्रमा MOON
भारत INDIA पै. 50P.

नरसिंह NARASIMHA
भारत INDIA Re. 1 रु.

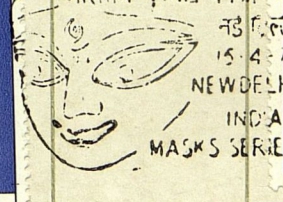
NEWDELHI
INDIAN
MASKS SERIES

RAVANA
भारत INDIA Rs. 2 रु.

रमेश चन्द्र दत्त
(1848-1909)

19वीं शताब्दी में भारत के उदीयमान बुद्धिजीवी वर्ग की जो भी महत्त्वाकांक्षाएं थीं रमेश चन्द्र दत्त में वे सभी फलीभूत हुई थीं। वे एक सिविल अधिकारी, भारत की शिक्षित नई पीढ़ी के प्रवक्ता और उदारपंथी राजनैतिक नेता थे। उन्होंने भारत की आर्थिक समस्याओं का उनके सही परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया था। वे एक विद्वान इतिहासकार और मौलिक रचनाकार भी थे।

उनका जन्म 17 अगस्त, 1848 में एक ऐसे परिवार में हुआ था, जिसने शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में प्रभूत प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे बड़े कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र थे, उनका विद्यार्थी-जीवन बड़ा शानदार था। अन्ततोगत्वा इंग्लैंड में वे 1868 में आई० सी० एस० की परीक्षा में बैठे और उसमें सफल हुए। भारत लौटने से पहले उन्होंने बैरिस्टरी की भी परीक्षा पास कर ली थी।

एक सिविल अधिकारी के रूप में भारत में उन्होंने पर्याप्त सफलता प्राप्त की थी। इस रूप में उनके कार्यों की सभी ने सराहना भी की थी, किन्तु 1897 में उन्होंने इंडियन सिविल सर्विस से अवकाश ले लिया। इसके बाद उन्होंने सार्वजनिक कार्य-कलापों तथा लेखन कार्यों में अपना समय लगाया। उनके जीवन का यह सबसे सार्थक अध्याय था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष, बड़ौदा रियासत के राजस्व मंत्री, लन्दन विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास के लेक्चरार या विकेन्द्रीकरण आयोग के सदस्य, इन सभी

रूपों में कार्य करते हुए उन्होंने भारतीय इतिहास और सभ्यता के क्षेत्र में बहुमूल्य ग्रन्थ रचे। साथ ही साथ उन्होंने बंगला भाषा को कई सुन्दर उपन्यास भी दिए।

उनके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में 'इंडिया अंडर अर्ली ब्रिटिश रूल, 1757-1837' और 'इकोनामिक हिस्ट्री आफ इंडिया इन द विक्टोरियन एज' की गणना की जाती है। भारत के कृषकों की दरिद्रता, बार-बार पड़ने वाले अकालों, भारत में भूमिकर का भारी बोझ, स्वदेशी उद्योगों की अवनति, विदेशी पूंजी का प्रभाव, बेहद खर्चीला प्रशासन और इससे सम्बन्ध रखने वाली अनेक समस्याओं का पहली बार अत्यन्त वैज्ञानिक और तथ्य—परक विश्लेषण इन दोनों प्रस्तावों में किया गया था। ये ग्रन्थ इन समस्याओं के भावी अध्ययन का मार्गदर्शन करते हैं।

उनकी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ सिविलिजेशन इन एंशियंट इंडिया' भारतीय इतिहास के क्षेत्र में एक महान् रचना है। इसके अतिरिक्त उन्होंने बहुत से लेख, पैम्फलेट और अभिभाषण भी लिखे थे।

1909 में 61 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

भारत के ऐसे महान् सपूत के सम्मान में एक स्मारक डाक-टिकट निकालते हुए डाक-तार विभाग बड़े गर्व का अनुभव करता है।

Romesh Chunder Dutt
(1848-1909)

As a civil servant, as a spokesman of the then new generation of educated Indians, as a political leader of the liberal school, as a perceptive student of economic problems, as a scholarly historian and as a creative writer, Romesh Chunder Dutt was all that the rising Indian intelligentsia of the nineteenth century aspired to be.

Born on August 17, 1848, in a family noted for academic and literary attainments,

he had a brilliant academic career which culminated in his passing the Indian Civil Service Examination in 1868 while in England. Before returning to India he was also called to the Bar.

His work in India as a civil servant evoked praise from all quarters, but he retired from the I.C.S. in 1897. Then followed the most fruitful part of his career devoted to public activities and writing. Whether serving as the President of the Indian National Congress, as Revenue Minister of the State of Baroda or while working as Lecturer in Indian History at the University of London or serving as a Member of the Decenrtalisation Commission he produced valuable works on Indian history and civilisation, besides some fine novels in Bengali.

His monumental works include "India under Early British Rule, 1757-1837" and the "Economic History of India in the Victorian Age". The poverty of the cultivators, the recurrent famines, the burdens of the land tax, the decline of indigenous industries, the impact of foreign capital, the excessive cost of administration and many other allied problems found their first scientific and factual analysis in these two volumes of his pioneering work.

In the field of Indian History, his great work was "History of Civilisation in Ancient India". There are many other writings by him in papers, articles, pamphlets and addresses.

He died at the age of 61 in 1909.

The P & T Department consider it their privilege to honour this great son of India by issuing a commemorative postage stamp.

कुमार श्री रणजीत सिंहजी
(1872-1933)

अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्धकार ए०जी० गार्डिनर ने रणजीत-सिंहजी के बारे में लिखा है कि 'यद्यपि वे एक छोटी सी रियासत के राजकुमार हैं किन्तु वास्तव में वे एक महान् खेल के महाराजा हैं।' रणजीत सिंहजी का पूरा नाम कर्नल हिज हाइनेस सर रणजीत सिंहजी विभाजी, महाराजा जाम साहब आफ नवानगर था, किन्तु क्रिकेट-जगत में वे मात्र 'रणजी' के नाम से जाने जाते हैं।

काठियावाड़ में जामनगर के पास एक छोटे से गांव सरोदर में 10 सितम्बर, 1872 को कुमार श्री रणजीत सिंहजी का जन्म हुआ था। 8 वर्ष की आयु में उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजकोट के राजकुमार कालेज में भेज दिया गया। यह पब्लिक स्कूल काठियावाड़ के राजाओं और राजकुमारों के लिए ही खुला था। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद रणजी 1888 में इंग्लैंड चले गए। अगले वर्ष वे कैम्ब्रिज में आ गए।

किन्तु उन्हें क्रिकेट 'ब्ल्यू' पाने के लिए 1893 तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। यूनिवर्सिटी में उनका यह अन्तिम वर्ष था।

रणजी इंग्लैंड में 27 वर्षों तक प्रथम श्रेणी क्रिकेट में भाग लेते रहे। वे इंग्लैंड में इंग्लैंड की ओर से तो खेलते ही थे, 1897-98 में उन्होंने आस्ट्रेलिया का भी दौरा किया था।

जिस युग में रणजी खिलाड़ी रहे, उसे क्रिकेट का स्वर्णिम युग कहा जाता है। इस युग में 1896, 1900 और 1904 के सत्रों में उनके रनों का औसत सबसे अधिक था। 1902 और

1903 में वे दूसरे स्थान पर थे। 1899 और 1901 में तीसरे, 1895 में चौथे और 1897 में वे पांचवें स्थान पर थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में रणजी ने कुल 72 शतक बनाए थे जिनमें से दो शतक आस्ट्रेलिया के विरुद्ध टेस्ट मैचों में बनाए थे। उन्होंने कुल 24,692 रन बनाए। उनके रनों का औसत 56.37 था। उन्होंने एक पारी में सर्वाधिक रन, 285 बनाए थे।

सर नेविल कार्डस ने लिखा है "क्रिकेट के खिलाड़ियों को रणजीत सिंहजी की कोटि के खिलाड़ी दुबारा देखने को नहीं मिलेंगे। खेल में वे पूरी तरह मौलिक थे। बल्लेबाजी के इतिहास और विकास में ऐसा कोई दूसरा खिलाड़ी नहीं है, जिसके साथ रणजी की तुलना की जा सके। सीधी आती हुई गेंद पर वे सीधा बल्ला कभी नहीं लगाते थे बल्कि बल्ले के साथ कलाई का झटका देते थे। झटका दिया नहीं कि लो, बिजली की तेजी से वह सीधी गेंद खूबसूरत ढंग से 'लेग-बाउंड्री' पार कर गई। गेंद फेंकने वाले असहाय खड़े ताकते रह गए। 'लेग-ग्लांस' पर रणजी का पूर्ण अधिकार था।"

रणजीत सिंहजी को जीवन की अनेक वस्तुओं में रुचि थी। उन्होंने काफी पढ़ा था। उन्होंने क्रिकेट पर 'जुबली बुक आफ क्रिकेट' नामक एक पुस्तक भी लिखी थी। क्रिकेट खेल की तकनीक पर जो भी उत्कृष्ट साहित्य उपलब्ध है, उसमें आज भी इस पुस्तक की गणना की जाती है। इंग्लैंड में 1915 में एक दुर्घटना में उनकी दाहिनी आंख जाती रही जिसकी वजह से उन्हें अपने उत्कृष्ट क्रिकेट-जीवन से सन्यास लेना पड़ा। उनकी मृत्यु 2 अप्रैल, 1933 को हुई थी।

डाक-तार विभाग ऐसे उत्कृष्ट क्रिकेट खिलाड़ी की स्मृति में यह विशेष डाक-टिकट संसार भर के क्रिकेट प्रेमियों को समर्पित करते हुए बड़े हर्ष का अनुभव कर रहा है।

K.S Ranjitsinhji
(1872-1933)

"The Prince of a little State, but the king of a great game" that is how the essayist

A.G. Gardiner described Col. His Highness Sir Ranjitsinhji Vibhaji, Maharaja Jamsaheb of Nawanagar—to use his full name and title—but 'Ranji' to all those who follow the game of cricket.

K.S Ranjitsinhji was born on September, 10, 1872, in Sarodar, a small village near Jamnagar in Kathiawad. At eight he was sent to the Rajkumar College at Rajkot, a Public school for the Chiefs and Princes of Kathiawad. After finishing school, Ranji went to England in 1888. The following year he went up to Cambridge.

To obtain his Cricket "Blue" however, he had to wait till 1893, his last year at the University.

Ranji's first-class cricket career in England spread over a period of 27 years. In addition to playing for England in England, Ranji toured Australia in 1897-98.

In an era which is called the Golden Age of Cricket, Ranij was first in the Season's average in 1896, 1900 and 1904, second in 1902 and 1903, third in 1899 and 1901, fourth in 1895 and fifth in 1897. In all Ranji scored 72 centuries in first-class cricket, two of which were in Test Matches against Australia. He aggregated 24,692 runs with an average of 56.37 runs. His highest score was 285.

Sir Neville Cardus writes : "Cricketers will never see the like of Ranjitsinhji. He was entirely original. There is nothing in all the history and development of batsmanship with which we can compare him.....The honest length ball was not met with honest straight bat, but there was a flick of wrist, and lo; the

straight ball was charmed away to leg boundary with the speed of thought. Bowlers stood transfixed; this leg-glance was Ranji's own stroke."

Ranjitsinhji had a wide range of interests. He was a very well-read man. He wrote a book on cricket called the "Jubilee Book of Cricket". This is still regarded as one of the classics in the literature on the technique of the game. A shooting accident in England in 1915 in which when he lost his right eye brought an end to his brilliant cricketing career. He died on April 2, 1933.

The P & T Department have much pleasure in dedicating this stamp in the memory of this remarkable cricketer, to the lovers of cricket all over the world.

विट्ठल भाई पटेल
(1873-1933)

सरदार वल्लभभाई पटेल के अग्रज विट्ठलभाई पटेल इस शताब्दी के तीसरे और चौथे दशकों में देश के राष्ट्रवादी आन्दोलन के दिग्गजों में थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उनके संबंध में अपनी आत्म-कथा में लिखा है "वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक महान और बड़े दबंग योद्धा थे।"

1915 में ही वे कांग्रेस में आ गये थे। बाद में वे स्वराज पार्टी के नेता बन गए। वे पं० मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास के घनिष्ट सहयोगी थे। वे एक कुशल संसद्-विज्ञ थे। 1925 में ही वे केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष चुने जा चुके थे। वे संसदीय नियमों और कार्य-विधि में पारंगत थे। सदन की कार्यवाहियों के कुशल संचालन के लिए सभी ने उनकी सराहना की। तथापि, जैसा कि नेहरू जी ने लिखा है, "अपनी (उनसे) स्वाधीनता के कारण वे सरकार की आंखों में कांटे की तरह चुभते रहे और बार-बार उनके पंख कतरने की कोशिशें होती रहीं।"

विट्ठलभाई पटेल 27 सितम्बर, 1873 को गुजरात राज्य के करमासाड नामक स्थान में पैदा हुए थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा करमासाड और नाडियाड में हुई थी। तदनंतर वे बम्बई चले गए और वहीं से उन्होंने जिला वकालत की परीक्षा पास की। कुछ ही वर्षों में एक अच्छे वकील के रूप में उनकी प्रसिद्धि हो गई और वकालत से उनको अच्छी आमदनी भी होने लगी। उनके अनुज वल्लभभाई पटेल भी उन्हीं के पग-

चिह्नों पर चले। 1908 में बैरिस्टर बनकर इंग्लैंड से लौटने पर, विट्ठलभाई ने बम्बई में वकालत शुरू की। दो साल बाद ही उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया। इसके बाद उन्होंने अपने आपको पूरी तरह सार्वजनिक कार्यों में लगा दिया। वे बम्बई नगर-निगम के अध्यक्ष हुए और तदनन्तर बम्बई विधान परिषद् में वे स्थानीय स्वायत्तशासी निकायों के प्रतिनिधि चुने गए।

1915 में वे नई दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए। तब तक वे तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों में काफी सक्रिय हो चुके थे। 1918 में बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। वे इस अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। अगले वर्ष एक प्रतिनिधि मंडल इंग्लैंड गया। यह प्रतिनिधि मंडल गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट (भारत सरकार अधिनियम) के संबंध में गठित संयुक्त संसदीय समिति के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए गया था। विट्ठलभाई इस प्रतिनिधि मंडल में कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए थे। अगले वर्ष भी वे भारतीय पक्ष के समर्थन के लिए इंग्लैंड गए। जब गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया तो विट्ठलभाई ने असेम्बली की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। बाद में 1922 में जब कौंसिल में प्रवेश के मसले को लेकर कांग्रेस में मतभेद पैदा हुआ, तो चित्तरंजनदास और मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर विट्ठलभाई ने स्वराज पार्टी का गठन किया। 1923 के चुनावों में इस पार्टी को 45 सीटें मिली थीं। इसके दो साल बाद वे केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष बने।

1930 में जब कांग्रेस ने विधान मंडलों का बहिष्कार किया, तो विट्ठलभाई ने असेम्बली से त्यागपत्र दे दिया। उसी वर्ष ब्रिटिश सरकार ने कार्य-समिति के अन्य सदस्यों के साथ विट्ठल-भाई को भी गिरफ्तार कर लिया। जेल में ही उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और सरकार ने उन्हें सजा की मीयाद पूरी होने से पहले ही जेल से रिहा कर दिया। बाद में भी बीमारी ने कभी उनका पीछा नहीं छोड़ा। 1932 में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया। किन्तु सरकार ने उन्हें वियना जाकर इलाज कराने की

अनुमति दे दी। बीमारी की हालत में भी वे अमेरिका के श्रमसाध्य दौरे पर गए, जहां उन्होंने अनेक व्याख्यान दिए। अमेरिका से वे वियना लौट गए। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस उन दिनों वियना में ही रह रहे थे। यहीं विट्ठलभाई नेताजी से मिले थे।

विट्ठलभाई लीग आफ नेशंस में भारत के पक्ष की वकालत करने के लिए जेनेवा गए थे। वहीं पर 22 अक्तूबर, 1933 को उनका स्वर्गवास हो गया।

जवाहरलाल नेहरू ने विट्ठलभाई को जैसी मर्मस्पर्शी श्रद्धांजलि अर्पित की थी, उनकी इससे बेहतर प्रशंसा नहीं हो सकती। उन्होंने कहा था "उनकी मृत्यु एक दुःखद घटना थी। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान जिस तरह हमारे बुजुर्ग और अनुभवी नेता एक के बाद एक हमारे बीच से उठते जा रहे थे, हमारे लिए यह बेहद अवसाद की बात थी।" विट्ठलभाई के प्रति अनेक महानुभावों ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की थीं। इनमें से अधिकतर श्रद्धांजलियों में एक संसद्-विज्ञ और केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष के रूप में उनकी सफलताओं की प्रशंसा की गई थी। किन्तु विट्ठलभाई इससे भी आगे बहुत कुछ थे—वे भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के एक महान् और बड़े दबंग योद्धा थे।

डाक-तार विभाग ऐसे दिग्गज संसद्-विज्ञ और स्वतंत्रता सेनानी के सम्मान में एक स्मारक डाक-टिकट निकाल कर बड़े गर्व का अनुभव कर रहा है।

Vithalbhai Patel
(1873-1933)

Vithalbhai Patel, elder brother of Sardar Vallabhbhai Patel was one of the stalwarts of the nationalist movement in the 'twenties' and 'thirties.' Jawaharlal Nehru, in his autobiography, wrote that he had been "a great and indomitable fighter for India's freedom."

He joined the Congress in 1915. Later he became a Swaraj Party leader and a close associate of Motilal Nehru and C.R. Das. A brilliant Parliamentarian, he was elected as

President of the Central Assembly in 1925. Master of parliamentary rules and procedures he evoked praise from all quarters for editing the proceedings of the House. Yet, as Nehru has noted, he "had become a thorn in the tender side of the government on account of his independence (of them) and attempts were made to clip his wings."

Vithalbhai Patel was born on September 27, 1873 in Karmasad in Gujarat. After early education at Karmasad and Nadiad, Vithalbhai wnet to Bombay and qualified for district pleadership. In a few years he became a well-known lawyer with considerable practice. His younger brother, Vallabhbhai followed his footsteps. After his return from England in 1908, as a barrister, Vithalbhai practised in Bombay. Two years later after he lost his wife, he devoted himself entirely to public affairs. He was President of the Bombay Corporation and later he was elected to the Bombay Legislative Council as a representative of local self-governing bodies.

Elected to the Central Assembly in New Delhi in 1915 he was very actively engaged in political affairs of the day. In 1918, he was the Chairman of the Reception Committee for the Congress session held in Bombay. The next year he was representing the Congress in a delegation sent to England to represent its views to the Joint Parliamentary Committee on the Govt. of India Act. During the following year also he again went to England to plead India's case.

When Gandhiji started the non-cooperation movement Vithalbhai resigned his Assembly seat. Later in 1922, when differences arose on the issue of Council entry

Vithalbhai alongwith C.R. Das and Motilal Nehru formed the Swaraj Party. This party won 45 seats in the 1923 elections. Two years later he became the President of the Central Assembly.

In 1930, when the Congress boycotted the legislatures, Vithalbhai resigned. The same year he was arrested alongwith other members of the Working Committee. Due to ill health, which dogged him from then on, he was released before the end of his term. In 1932 he was once again arrested, but due to illness, was allowed to go to Vienna for treatment. But illness did not prevent him from proceeding on a strenuous lecture tour of the United States. On his return to Vienna he met Netaji Subhas Chandra Bose, who was then living there.

Vithalbhai died on October 22, 1933 in Geneva, where he had gone to plead India's case at the League of Nations.

Jawaharlal Nehru has paid a moving tribute to Vithalbhai Patel which cannot be bettered. "His passing away was a painful event and the thought of our veteran leaders leaving us in the way, one after another, in the midst of our struggle was extraordinarily depressing one." Many tributes were paid to Vithalbhai and most of these laid stress on his ability as a Parliamentarian and his success as President of the Assembly. Vithalbhai was something much more than that—he had been a great and indomitable fighter for India's freedom.

The P & T Department is privileged to bring out a commemorative stamp in honour of this veteran Parliamentarian and Freedom Fighter.

10

सत्यमेव जयते

प्रसिद्ध व्यक्ति टिकट माला

PERSONALITIES STAMPS SERIES

स्मारक डाक टिकट

COMMEMORATION STAMPS

27-9-1973

डिज़ाइन का विवरण
Description of Design

रमेश चन्द्र दत्त
Romesh Chunder Dutt

डाक-टिकट खड़े आकार का है। इसमें श्री दत्त की अंडाकार छवि अंकित है।

The stamp is vertical and depicts the portrait of the personality in an oval frame.

कुमार श्री रणजीत सिंहजी
K.S. Ranjitsinhji

डाक-टिकट खड़े आकार का है। इसमें क्रिकेट खेलते हुए श्री रणजीत सिंहजी की छवि अंकित है।

The stamp is vertical and depicts the full portrait of the personality "in action".

विट्ठल भाई पटेल
Vithalbhai Patel

डाक-टिकट खड़े आकार का है और इसमें श्री पटेल की छवि अंकित है।

The stamp is vertical and depicts the portrait of the personality.

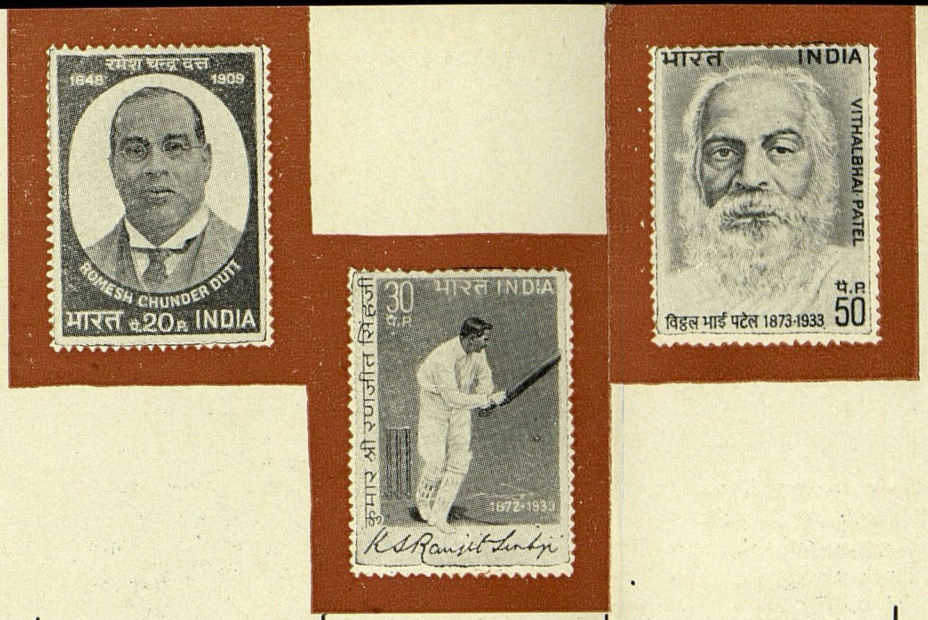

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

	रमेश चन्द्र दत्त ROMESH CHUNDER DUTT	कुमार श्री रणजीत सिंहजी K.S. RANJITSINHJI	विट्ठल भाई पटेल VITHALBHAI PATEL
मूल्यवर्ग Denomination	20 पैं० P.	30 पैं० P.	50 पैं० P.
कुल आकार Overall size	3.91 × 2.90 सें० मी० cms.	3.91 × 2.90 सें० मी० cms.	3.91 × 2.90 सें० मी० cms.
मुद्रण आकार Printing size	3.56 × 2.54 सें० मी० cms.	3.56 × 2.54 सें० मी० cms.	3.56 × 2.54 सें० मी० cms.
प्रति शीट संख्या Number per issue sheet	35	35	35
रंग Colour	गहरा भूरा Dark Brown	जैतूनी हरा Olive Green	बादामी Hornet Brown
छिद्रण Perforation	13 × 13	13 × 13	13 × 13
जलचिह्न Watermark	बिना जलचिह्न वाले चिपचिपे डाक-टिकट कागज की शीटों पर मुद्रित Printed on unwatermarked Adhesive Stamp paper on sheets.	बिना जलचिह्न वाले चिपचिपे डाक-टिकट कागज की रीलों पर मुद्रित Printed on unwatermarked Adhesive Stamp paper on reels.	बिना जलचिह्न वाले चिपचिपे डाक-टिकट कागज की रीलों पर मुद्रित Printed on unwatermarked Adhesive Stamp paper on reels.
मुद्रित टिकटों की संख्या Quantity printed	15 लाख 1.5 Million	15 लाख 1.5 Million	15 लाख 1.5 Million

इन डाक-टिकटों की डिज़ाइन तथा फोटो-ग्रेव्योर प्रक्रिया से छपाई भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड में की गई है । ये 27 सितम्बर, 1973 को जारी किए जाएंगे ।

Stamps which are designed and printed at the India Security Press, Nasik Road, by Photogravure process will be released on September 27, 1973.

12

बिक्री की शर्तें

विदेशों से नए डाक-टिकट व प्रथम दिवस आवरण के आर्डर भारतीय डाक-टिकट संकलन ब्यूरो, बड़ा डाकघर, बम्बई-400001 के पते पर भेजना चाहिए। आर्डर के साथ ऐसा बैंक ड्राफ्ट या क्रास चेक भी भेजिए जो भारत में भुनाया जा सके।

TERMS OF SALE

Overseas orders for the supply of the new stamps and First Day Covers should be addressed to the ***Indian Philatelic Bureau, G.P.O.,*** Bombay-400001 and be accompanied by a Bank draft or crossed cheque encashable in India.

भारतीय डाक-तार विभाग
INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

मूल्य PRICE 25 पैं० P.

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of I.&B., Govt. of India, New Delhi, for the Indian Posts & Telegraphs Department and printed at The Caxton Press Private Ltd., New Delhi-110055.

8/11/73-PPI

davp

13

भारतीय मुखौटे

डाक-टिकट

INDIAN MASKS SERIES

POSTAGE STAMPS

15-4-1974

तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA
भारतीय मुखौटे INDIAN MASKS SERIES
डाक-टिकट POSTAGE STAMPS

जारी करने की तारीख Date of issue	15-4-1974
मूल्य वर्ग Denomination	20 पै., 50 पै. P., P. 1 रु., 2 रु. Re. Rs.
कुल आकार Overall Size	3.91X2.90 सें.मी. cms.
छपाई आकार Printing Size	3.56X2.54 सें.मी. cms.
प्रति शीट संख्या Number per iesue sheet	35
रंग Colour	बहुरंगी Multi-colour
छिद्रण Perforation	13X13
जलचिह्न Watermark	जलचिह्न रहित गोंद लगे पी. जी. कोटेड कागज पर छपा Printed on un-watermarked Gummed P.G. Coated-paper.
छपाई प्रक्रिया Printing process	बहुरंगी ग्रेव्योर प्रक्रिया Multicolour Gravure Process
छपे-डाक टिकटों की संख्या Number Printed:	20 पै. -50 लाख 50 पै. -30 लाख 1 रुपया- 20 लाख 2 रुपये - 20 लाख 20P. - 5 Million 50P. - 3 ,, Re. 1- 2 ,, Rs. 2- 2 ,,
डिज़ाइन और छपाई Designed and Printed at	इंडिया सिक्योरिटी प्रेस में India Security Press

भारत के मुखौटे

मुखौटों के प्रति युगों से मनुष्य के मन में एक अजीब-सा आकर्षण बना हुआ है। मुखौटों का उद्गम आदि मानव में छिपी उस प्रवृत्ति से हुआ है जो आस-पास के विरोधी वातावरण को वशीकरण और धर्म के जरिये नियंत्रित करने के लिए प्रयत्नशील रही है। मनुष्य ने देवी-देवताओं के अदृश्य जगत के साथ सम्पर्क स्थापित करने और आस-पास के खतरों से रक्षा की पुकार करने के लिए इनमें एक माध्यम ढूंढ निकाला। भारत प्राचीन सभ्यता का केन्द्र रहा है और यहां तो बलिदान, प्रतीक, अनुष्ठान, शोभा-यात्रा और अभिनय संबंधी सभी प्रकार के मुखौटों का प्रयोग हुआ है।

शायद मुखौटों का प्राचीनतम रूप वह रहा है जब कि लोग चेहरे और शरीर पर सीधे रंग आदि का लेप कर उन्हें कलात्मक ढंग से सजाते थे। अंदमान द्वीप के ओंजेस लोग अभी तक मुखौटे का यही रूप अपनाये हुए हैं। **पशु-चारण** सभ्यता के विकास के साथ-साथ पितरों की पूजा प्रारम्भ हुई। उस काल में ये मुखौटे अक्सर दिवंगत पूर्वजों की आत्माओं के प्रतीक माने जाते थे। **व्यवस्थित खेतिहर समाज के उदय के** साथ धर्म के क्षेत्र में इनका

प्रयोग बढ़ने लगा, जादू-टोने ने एक साकार धर्म का रूप ले लिया, जादू-टोने वाले डाक्टर पुरोहित बन गए और अनुष्ठानिक नृत्यों को बड़े-बड़े धार्मिक समारोहों में अधिक से अधिक स्थान मिलने लगा। अब तो मुखौटे **रहस्यों** और **विश्व कल्पना** की नई-नई बातों का उद्‌घाटन करने के माध्यम बन गए हैं। आधुनिक युग के नृत्य-नाटकों में, जो पौराणिक कथाओं और प्राचीन जनश्रुतियों पर आधारित होते हैं, देवी-देवताओं, चरित्र-नायकों और असुर पात्रों का अभिनय कर इनके प्रति जनता की आम धारणा को साकार करना इन मुखौटों के जरिये और भी सुलभ हो गया है।

भारत में, परम्परागत नृत्य-नाटकों के लिए विषय-वस्तु सामान्यत: पौराणिक आख्यानों और रामायण तथा महाभारत जैसे प्रसिद्ध महाकाव्यों से ली जाती है। इनमें से कुछ नृत्य-नाटकों में राक्षसों और अलौकिक पात्रों का अभिनय करने वाले व्यक्ति मुखौटों का प्रयोग करते हैं। उत्तर प्रदेश में बनारस के पास रामनगर में दशहरे के समय पर जो रामलीला होती है उसमें बड़े ही कलात्मक मुखौटे काम में लाए जाते हैं। ये मुखौटे आमतौर से लुगदे, तांबे के मुलम्मे और जरी का इस्तेमाल करके बनाए जाते हैं। दक्षिण भारत में भागवत मेले के दौरान जिसे भक्तों का संगम ही कहा जाना चाहिए, जब बालक भक्त प्रह्लाद की कथा रंगमंच पर प्रस्तुत की जाती है, तो जो व्यक्ति हिरण्यकशिपु का बध करने वाले भगवान नरसिंह की भूमिका निभाता है, वह बड़ा ही रंगीन और आभूषणों से मंडित एक भव्य पुराना मुखौटा पहनता है जिसमें नरसिंह की रोंगटे खड़े कर देने वाली भयानक मुद्रा पूरी तरह से प्रकट होती है। इन मुखौटों को भी पूज्य माना जाता है और जब इसे काम में नहीं लाते तो मन्दिर के भीतर रख देते हैं और इसकी प्रतिदिन पूजा की

जाती है । वस्तुतः पौराणिक नाटकों में प्रयुक्त मुखौटों की पूजा का यह प्रचलन देश के कई भागों में समान रूप से पाया जाता है ।

डाक-तार विभाग भारत के कुछेक मुखौटों को चित्रित करने वाले बहुरंगे चार डाक-टिकटों की एक शृंखला निकाल कर बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है । सूर्य, चन्द्रमा और रावण के तीन मुखौटे लुगदे से बने मुखौटे हैं, जो बनारस के पास रामनगर की रामलीला में काम में लाए जाते हैं और चौथा मुखौटा नरसिंह का है, जो सामान्यतः हलकी लकड़ी का बना होता है और जो दक्षिण भारत में भागवत मेला समारोह में परम्परागत रूप से प्रयुक्त होता है । इस अवसर पर एक छिद्रित लघु शीट भी जिस पर चारों डाक-टिकट छपे हैं, प्रकाशित की जा रही है ।

Masks in India

Throughout the ages, masks have held a strange fascination for mankind. Masks originated from the primitive man's urge to control the rather hostile environment through magic and religion. He sought in them a medium to establish contact with the unseen world of spirits and to call on them to protect him against the dangers lurking in his surroundings. In India, which has been the cradle of one of the ancient civilisations, the entire gamut of uses of masks—sacrificial, totemic, ritual, processional, theatrical—is utilised.

Perhaps, the earliest form taken by the mask is painting of the face and the body, with direct application to the skin of colouring matter—the Onges of the Andamans still use this method. With the advent of pastoral civilisation came ancestor worship: the masks often represented the spirits of the departed ancestors. With the coming of settled agricultural communities, masks came to be increasingly used in the service of religion, with magical beliefs evolving into organised religion, witch doctors becoming priests and ritual dances becoming part of increasingly elaborate religious ceremonies. Masks became a vehicle for projection of esoteric doctrines and interpretation of new concepts of the world. In more recent times, masks came handy in dramatising popular conceptions of gods,

heroes and demoniac characters in dance-drama featuring episodes from mythology and ancient lore.

In India, themes for the traditional dance-drama are usually derived from Puranic mythology and popular epics like the Ramayana and the Mahabharata. In these dance-dramas, masks are used by the players to depict demons and super-human characters.

In Uttar Pradesh, highly artistic masks are used in the 'Ramlila' performed during Dussehra at Ram Nagar near Banaras. These masks are generally made of papier-mache, gilded copper and zari work.

In South India, during Bhagwat Mela (literally a concourse of devotees) when the story of the child devotee Prahlada is staged, the player who depicts Narasimha, the Lion-god who slays the demon king Hiranyakashipu, wears a magnificent ritual mask richly coloured and bejewelled and effectively conveying the blood-curdling fury of Narasimha. This mask is itself an object of veneration and when not in use, is kept inside a temple and prayers offered daily. Indeed this practice of worshipping masks used in mythological plays is common in many parts of the country.

The P&T Department has great pleasure in presenting a series of four stamps in multi-colours showing some of the masks used in India. The three masks—The Sun, the Moon and the Ravana — are papier-mache masks used in 'Ramlila' at Ram Nagar near Banaras and the fourth is the Narasimha mask usually made of light wood and traditionally used in Bhagwat Mela performances in South India. Perforated miniature sheet containing all the four stamps is also being brought out on this occasion.

डिजाइन का ब्यौरा

20 पै., 50 पै., 1 रु., और 2 रु. मूल्य के चार डाक-टिकटों पर क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, नरसिंह और रावण के मुखौटे चित्रित हैं।

DESCRIPTION OF DESIGN

The four stamps in the denomination of 20P, 50P, Re. 1 & Rs. 2 depict the masks of Sun, Moon, Narasimha and Ravana, respectively.

बिक्री की शर्तें

नये डाक-टिकट व प्रथम दिवस आवरण की सप्लाई के लिए विदेशों के मांग-पत्र भारतीय डाक-टिकट संकलन ब्यूरो, बड़ा डाकघर, बम्बई- 400001 के पते पर भेजा जाना चाहिए और उनके साथ भारत में भुनाया जा सकने वाला बैंक ड्राफ्ट या रेखांकित चेक भी भेजा जाना चाहिए।

TERMS OF SALE

Overseas orders for the supply of the new stamps and First Day Covers should be addressed to the **Indian Philatelic Bureau, G.P.O.**, Bombay- 400001 and be accompanied by a bank draft or crossed cheque encashable in India.

भारतीय डाक-तार विभाग
INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

मानार्थ
Complimentary

Designed/produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of I. & B., Govt, of India, New Delhi for the Indian Posts & Telegraphs Department and printed at the Delhi Press, N. Delhi.
davp 8/23/73-PPI April 1974

विशेष डाक-टिकट

भारतीय लघु चित्रकारी

SPECIAL POSTAGE STAMPS

Indian Miniature Paintings

5-5-1973

जंजीर से बंधा हाथी

जहांगीर के समय के चित्रकार ज़ैन-अल-आबिदीन ने इसे बनाया था। यह सजीव, सुन्दर, सज्जायुक्त आड़ा चित्र है। इसमें दाहिनी ओर एक वृक्ष और गाती हुई चिड़ियाएं हैं, जिन्हें देखकर 16वीं सदी की फारसी चित्रकारी का स्मरण हो आता है। इसमें एक सुसज्जित हाथी है जिसके ऊपर बोझा लदा हुआ है, गले में घंटियां हैं और दांतों के छल्लों में जंजीरें बंधी हुई हैं और उसे राजकुमार द्वारा वश में करते हुए दिखाया गया है। इसकी मूल प्रति पूर्वी बर्लिन संग्रहालय में सुरक्षित है।

युगल नृत्य

इस चित्र में दो महिला नर्तकियों को आकर्षक कत्थक नृत्य करते हुए दिखाया गया है जो कि 17वीं और 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का लोकरंजक विषय रहा है। 17वीं शताब्दी के अन्तिम पच्चीस वर्षों के दौरान औरंगज़ेब के समय का यह एक लाक्षणिक पद्धति का चित्र है। इसका आकार 18·8×11·7 सें० मी० है। यह बम्बई में लेडी कावसजी जहांगीर के संग्रहालय में सुरक्षित है।

यह डाक-टिकट माला 5-5-1973 को जारी की जाएगी। डाक-तार विभाग सर्वश्री महाराजा किशनगढ़, लेडी कावसजी जहांगीर, गोपी कृष्ण कनौड़िया और पूर्वी बर्लिन संग्रहालय के अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करता है जिन्होंने कृपापूर्वक उपर्युक्त चित्रों को डाक-टिकटों पर उतारने की अनुमति प्रदान की है।

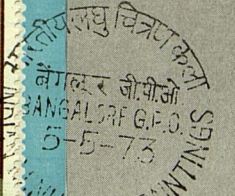

18
इंडिपेक्स
INDIPEX
1973
पै.
P.20
भारत
INDIA
रु.
Rs.2 भारत INDIA
पै.
P.50 भारत INDIA
बंगलूर जी.पी.ओ.
BANGALORE G.P.O.
5-5-73
MINIATURE PAINTINGS
बंगलूर जी.पी.ओ.
BANGALORE G.P.O.
5-5-73
MINIATURE PAINTINGS

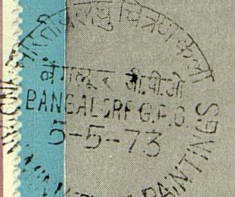

CHAINED ELEPHANT

The painting has been composed in a fine diagonal, lively as well as decorative by the artist, Zain-al-Abidin, during Emperor Jehangir's period. The tree on the right with singing birds is considered as being akin to the Persian painting of the 16th century. The elephant, decorated with bell hangings and tusk rings tied with chains and loaded with a weight is being tamed by a prince. The original is among the collection of East Berlin Museum.

DANCE DUET

It is an attractive movement of two Kathak female dancers, a popular subject in the late 17th and 18th centuries. It is a typical example of paintings executed during Aurangzeb's period in the last quarter of the 17th century. The size of the painting is 18.8 x 11.7 cms. It is among the collection of Lady Cowasji Jehangir, Bombay.

The series will be issued on 5-5-1973. The Department is thankful to Maharaja of Kishangarh, Lady Cowasji Jehangir, Gopi Krishna Kanoria and authorities of East Berlin Museum for their having permitted us to adopt the paintings on the stamps.

भारत में चित्रकला के प्राचीनतम नमूने, जो आज भी विद्यमान हैं, चट्टानें काटकर बनाई गई अजन्ता की गुफाएं हैं। इनका निर्माण ईसा पूर्व दूसरी-पहली शताब्दियों और ईसा पश्चात् 5 वीं से 7 वीं शताब्दियों के दौरान हुआ। अन्य शानदार भित्तिचित्रों के नमूने बादामी एवं सित्तनवासल के गुफा मन्दिर, एलोरा का कैलाश मन्दिर, कांचीपुरम तथा पानमलाई के पल्लव मंदिर और तंजोर मन्दिर की सुप्रसिद्ध भित्ति-चित्र-कारी तथा तत्पश्चात् विजयनगर के अनेक स्मारक हैं। 11वीं तथा 12वीं शताब्दियों में बड़े आकार के भित्ति-चित्रों के साथ-साथ ताड़-पत्रों पर लिखित बौद्ध पाण्डुलिपियों पर लघु चित्र भी बनाये गये।

हुमायूं काल की चित्रकला, जो अकबर के समय में भी जारी रही, भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक नये मोड़ की परिचायक है। फारसी चित्रकारी और देशी भारतीय पद्धति के सफल सामंजस्य से विकसित हुई मुग़ल कलम नैसर्गिकता का अप्रतिम उदाहरण है जिसकी विशेषता है सूक्ष्मता और सुकुमार चित्रण। जहांगीर के शासन काल में देशी चित्रकला में और भी परिमार्जन हुआ।

राजस्थान तथा मध्य भारत की देशी चित्रकला में मुग़ल शैली के प्रभाव स्वरूप अनेक लघु-चित्रकला शैलियों का जन्म तथा विकास हुआ। 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य तक देश में मेवाड़, बूंदी, कोटा, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, किशनगढ़, मालवा और दक्षिण में प्रमुख चित्रकला शैलियों के अनेक केन्द्र विकसित हुए।

डाक-तार विभाग को लघुचित्रों पर डाक-टिकट निकालते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। कलाकारों तथा भारतीय लघुचित्रों का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की एक समिति ने काफी समय लगाकर लघु-चित्रकारी के विशाल भाण्डार में से चार चित्र अंतिम रूप से चुने हैं। इनका चयन इनकी मुखर रंगीन कलात्मकता को ध्यान में रख कर किया गया है, जो डाक-टिकटों पर और भी लघु रूप में छापने के लिए उपयुक्त हैं। इनमें से दो राजस्थान से और बाकी दो मुग़ल कालीन चित्रों से लिये गए हैं।

भारतीय लघु चित्रकारी

INDIAN MINIATURE PAINTINGS

The earliest examples of paintings in India still available are from the rock-cut caves of Ajanta, executed during the 2nd and first centuries B.C. and 5th to 7th centuries A. D. Other murals of great elegance are from cave temples of Badami and Sittannvasal, the Kailasa at Ellora, Pallava temples at Kanchipuram and Panamalai and the famous wall paintings in the Tanjore temple and later still in several Vijayanagar monuments. During the 11th and 12th centuries, large scale wall-paintings were supplemented by miniature paintings in the form of illustrated Buddhist manuscripts on palm leaves.

Paintings in Humayun's time and continued by Akbar represent a landmark in the history of painting in India. The Mughal style, evolved as a result of happy synthesis of the indigenous Indian style of Persian painting displays a rare quality of naturalism and is marked by fine and delicate drawing. Under Jahangir, the art of painting was greatly refined.

Impact of the Mughal style on indigenous style of painting in Rajasthan and in Central India was responsible for the origin and growth of a number of schools of miniature painting. Mewar, Bundi, Kotah, Jaipur, Bikaner, Jodhpur, Kishangarh, Malwa and Deccan were the important schools of painting that flourished from the 17th to the middle of the 19th century.

The P&T Department is happy to bring out a series on the Miniature Paintings. A committee of artists and knowledgeable persons on Indian miniature devoted considerable time to finally select the four paintings from the vast field of miniatures considering their bold colourful motifs suitable for further reduction on stamps. Two of these have been taken from Rajasthan and two from Mughal paintings.

राधा (किशनगढ़ शैली)

इस चित्र में किशनगढ़ आदर्श के नारी सौन्दर्य की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यह चित्र स्थानीय कलाकार निहाल चन्द की कृति है, जिन्होंने लय की गंभीरता और निरपवाद सौन्दर्य के साथ उत्तरवर्ती मुग़ल शैली का समन्वय करके अपनी सुप्रसिद्ध कलाकृति राधा (किशनगढ़ शैली) की रचना की थी। यह चित्र सन् 1778 का है जिसका आकार 48·8 × 36·3 सें० मी० है। यह महाराजा किशनगढ़ के संग्रहालय में सुरक्षित है।

ऊंट पर सवार प्रेमी-प्रेमिका

इस चित्र में एक संगीत भंगिमा मारू रागिनी को प्रदर्शित किया गया है। मारू नाम राजकुमार ढोला तथा राजकुमारी मारू की सुप्रसिद्ध लोकगाथा से लिया गया है, जिनका चिरकाल के बाद प्रणय मिलन वफादार ऊंट की निष्ठा से ही संभव हो सका। यह चित्र राजस्थानी लघु चित्रकारी के उत्कृष्ट चित्रों में से एक है, जिसे 1605 ई० के आसपास चित्रकार नासिरुद्दीन ने बनाया था। इसका आकार 20·5 × 18·8 सें० मी० है। इस समय यह पटना के गोपी कृष्ण कनौड़िया संग्रहालय में सुरक्षित है।

21

राधा-किशनगढ़ RADHA-KISHANGARH
पै. P. 20 भारत INDIA

भारत
INDIA
1 रु. Re.

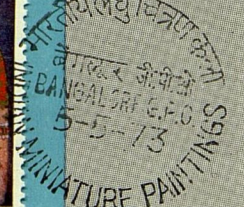
भारतीय लघु चित्रण कला
बेंगलूर जी.पी.ओ.
BANGALORE G.P.O
5-5-73
INDIAN MINIATURE PAINTINGS

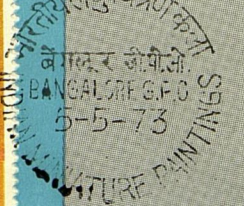
भारतीय लघु चित्रण कला
बेंगलूर जी.पी.ओ.
BANGALORE G.P.O
5-5-73
INDIAN MINIATURE PAINTINGS

RADHA-KISHANGARH

Here we see the most perfect expression of the Kishangarh ideal of feminine loveliness. The painting is by a local artist, Nihal Chand, who imbued the late Mughal painting with serenity of rhythm and idyllic charm to bring out his famous Radha Kishangarh painting. It is of 1778 AD and its size is 48.8 x 36.3 cms. It is among the collection of Maharaja of Kishangarh.

LOVERS ON A CAMEL

It illustrates a musical mode-Maru Ragini. The name Maru is borrowed from the famous folk tale of Dhola and Maru the prince and princess who were united at long last by the devotion of a faithful camel. This is one of the finest pieces of Rajasthani miniature done by the artist, Nasir-ud-din near about 1605 A.D. The size of the painting is 20.5 x 18.8 cms. It is now among the collection of Gopi Krishna Kanoria, Patna.

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

भारतीय लघु चित्रकारी

Indian Miniature Paintings

विशेष डाक-टिकट

Special Postage Stamps

जारी करने की तारीख / **Date of Issue**	**5-5-1973**
मूल्य वर्ग / **Denomination**	20 पै॰ **P.** 50 पै॰ **P.** 1 रु॰ **Re.** 2 रु॰ **Rs.**
कुल आकार / **Overall Size**	5·8 × 3·91 सें॰ मी॰ **cms.**
मुद्रण आकार / **Printing Size**	5·435 × 3·55 सें॰ मी॰ **cms.**
प्रतिशीट संख्या / **Number per issue sheet**	40
रंग / **Colour**	बहुरंगी / **Multicolour**
छिद्रण / **Perforation**	13 × 13
जलचिह्न / **Watermark**	बिना जलचिह्न वाले डाक-टिकट के चिपचिपे कागज पर मुद्रित / **Printed on unwatermarked Adhesive coated Stamp Paper.**
मुद्रण प्रक्रिया / **Printing Process**	फोटोग्रेव्योर / **Photogravure**
मुद्रित टिकटों की संख्या / **Number Printed**	20 पै॰ **P.** —50,00,000 50 पै॰ **P.** —30,00,000 1 रु॰ **Re** —20,00,000 2 रु॰ **Rs** —20,00,000
डिज़ाइन और मुद्रण / **Designed and Printed at**	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय / **India Security Press**

सूर्य SUN
भारत INDIA पै. 20 P.

चन्द्रमा MOON
भारत INDIA पै. 50 P.

भारतीय मुखौटों की श्रृंखला
INDIAN MASKS SERIES

नरसिंह NARASIMHA
भारत INDIA Re. 1 रु.

रावण RAVANA
भारत INDIA Rs. 2 रु.